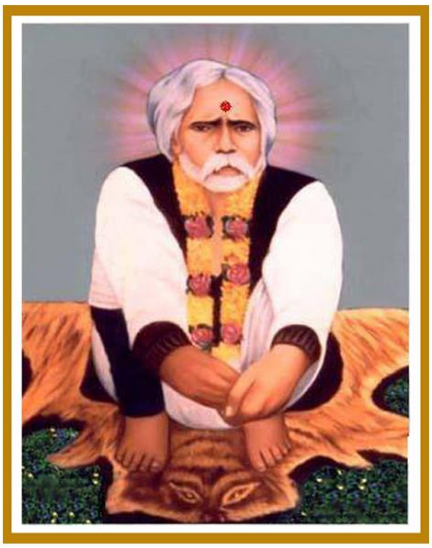

OM SHRI GURU PARAMATMANE NAMAH

MANOHAR JIVAN DARSHAN

SHRI SHRI 1008 SHRI MANOHAR DAS AGHORI

जनम (प्रगटीकरण) - Birth (Manifestation)
भाद्रपद शुक्ला - Bhadrapada Shukla
जलझुलनी एकादशी - Jaljulni Ekadashi
रात्रि ११ बजे पुष्य नक्षत्र में - 11 pm in the constellation Pushya
सम्वत् १९५२ (सन् 1894) - Samvat 1952 (AD 1894)

सत्यलोकवास (निर्वाण) - Satyalokwas (Nirvana)
अगहन सुदी ६ मंगलवार - Agahan Sudi 6 Tuesday
सुबह ५ बजे - 5 am
सम्वत् २०१५ (16 दिसम्बर 1958) - Samvat 2015 (16 December 1958)

WWW.AGHORI.IT

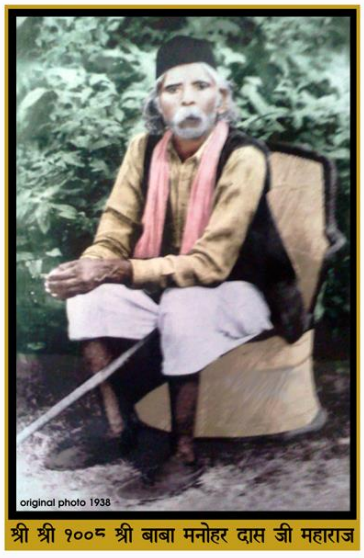

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज

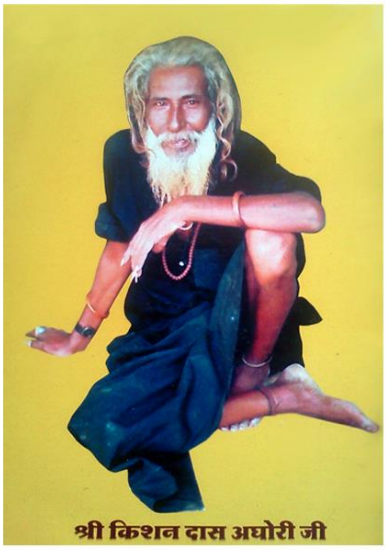
श्री किशन दास अघोरी जी

This book is the cleaning job done on photocopies of an original book,
now unobtainable, recovered by Radhika Dasi Aghori.
Some parts of the book were not legible necessitating a restoration.

In memory of Baba Manohar Das Ji, Baba Kishan Das Aghori guru's.

With love and devotion
Govinda Das Aghori

Questo libro è il lavoro di pulizia fatto su delle fotocopie di un libro originale,
ormai introvabile, recuperato da Radhika Dasi Aghori.
Alcune parti del libro non erano ben leggibili rendendo così necessario un restauro.

In ricordo di Baba Manohar Das Ji guru di Baba Kishan Das Aghori.

Con amore e devozione
Govinda Das Aghori

संस्मरण खण्ड

MEMOIRS

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 20

हम सत्य लोक में ही बैठे हैं।

[सत्यलोक प्रस्थान अगहन सुदी षष्टमी मंगलवार सम्वत् 2016,
सन् 16 दिसम्बर, 1958]

एक बार की घटना है कि बाबा राम की दुकान के समने शिवालय के चबूतरे पर विराजे हुए थे। उसी समय दो बड़े तेजस्वी महात्मा जिनमें एक काले रंग का काले कपड़े पहने हुए था तथा दूसरा गोरे रंगा का था, जिसने पीले वस्त्र पहन रखे थे। दोनों बाबा के समने आकर खड़े हो गये। उनमें से एक बोले–"कि तुम अभी तक गये नहीं तुम चोर हो, तुमने वायदा खिलाफी की है।" बाबा उनकी, बात सुनकर चुप रहे और अपना सिर नीचा कर लिया। वे दोनों साधु ऐसा कहकर चले गये। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि वे काल भैरव थे। कुछ का अनुमान है कि वे धर्मराज के भेजे दूत थे। जो बाबा को सत्यलोक जाने का इशारा कर गये थे।

कुछ समय पश्चात् बाबा ने अन्न जल त्याग दिया। कम से कम 15 दिन तक उन्हेंने अन्न जल गांजा, सुलफा सभी चीजों का त्याग कर दिया और वे अखण्ड प्रणव'' का जाप करने लगे। वह अक्सर दामोदरजी महाराज वाले कुँए का जल मंगवाया करते थे। उस कुँए के जल को पसंद करते थे और श्रेष्ट बतलाया करते थे। जल की बाल्टी मंगाकर रखा लिया करते थे लेकिन उसे पीते न थे। ये क्रम लगभग पन्द्रह दिन तक चलता रहा था। बाबा के देह त्याग के दिन पूर्व सायं श्री देवीराम तहसीलदार भुसावर वाला बाबा के पास आये और बोले–"ये वस्त्र जीर्ण हो गया है इसको बदल डालो और सत्यलोक को प्रस्थान करो।" बाबा ने उससे कहा–"हम सत्य लोक में ही बैठे हैं और सत्यलोक से ही बोल रहे हैं।"

दूसरे दिन अगहन सुदी षष्ठमी प्रातः 5.00 बजे मैं चुंगी की ड्यूटी हेतु प्रातः काल की बस से जांच हेतु वहाँ से गुजर रहा था। बाबा उस समय गोवर्धन कोठारी पुत्र श्री अन्तुलाल, जगनु कोठारी की टीन में चारपाई पर लेटे हुए थे। पास ही धूना चल रहा था। मैं वहाँ से गुजर रहा था और बाबा को रुककर प्रणाम किया। इतने में बाबा ने आवाज लगाई "मन्नू तू आ गया क्या?" मैंने कहा-"हाँ हुजूर।" बाबा बोले-"इधर आ मेरे अंगूठे को देख, मुझे कुछ शुभा (शक) सा लगता है कहीं टट्टी, पेशाब का चिह्न तो नहीं है, छीट तो नहीं है, मैंने टार्च लगाकर देखा कुछ नहीं था। सिर्फ एक पानी की सी बूंद बाबा के अंगूठे पर लगी हुई थी। बाबा ने कहा–"इसे धो डालो" मैंने जल लेकर उसे कई बार धोया, बाबा ने अपने दोनों हाथ कोहनी तक धूलवाये और कहा–"इसे साफी से पौंछ दे। मेरे पास उस वक्त साफी नहीं थी

तो मैंने अपनी कमीज से ही बाबा के दोनों हाथों को पौंछ दिया। यहाँ पर विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बाबा ने मुझे एक माह पहले यह हुक्म दिया था कि लाला। साफी रखा कर ''लेकिन आज भी मेरे पास साफी नहीं थी। इसके बाद बाबा ने कहा–कि मन्नु मेरी चद्दर निकालो। मैंने बाबा के सिरहाने से बाबा की प्रिय चादर जो भगवे रंग की एवं सूती थी। यह चादर बाबा को बहुत अच्छी लगती थी। उसे वे हमेशा अपने पास रखते थे। इस चादर को एक दशनामी साधु ने भेंट किया था। उसके पास कई चद्दरें थी, लेकिन बाबा ने इसी रंग की भगवे रंग की सूती चादर को लेकर अपने पास रख लिया था। मैंने उस चादर को बाबा के सिरहाने से निकाल कर दे दिया। बाबा ने उसे अपने ऊपर ओढ लिया और मुझसे बोले कि ''मन्नु जरा मुझे ऊपर सरका, मैंने बाबा के शरीर को सिरहाने की ओर सरका दिया। इसके बाद बाबा पुनः बोले–"कि जरा और सरका, मैंने बाबा के शरीर को सिरहाने की ओर सरका दिया। इसके बाद बाबा पुनः बोले कि जरा और सरका" मैंने आज्ञा का पालन किया। तीसरी बार और ज्यादा सरकाने की गुंजाइश नहीं थी। ऐसा करने से आधा शरीर जमीन में लटक जाता, मैंने झल्ला कर कहा ''हुजूर अब तो आप नीचे गिर जाओगे।'' पास ही जांगिड़ ब्राह्मण, जिसको बाबा पण्डित कहते हैं और प्रायः बाहर से बाबा की सेवा में आया जाया करता था। वह पास ही बैठा हुआ था। बाबा ने अपने दोनों पैर लम्बे कर दिये और अपना सिर सिराने की ओर नीचे की ओर लटकाया, मैंने उस जांगिड़ ब्राह्मण से कहा–''पीछे की ओर बाबा के सिर के नीचे हाथों का सहारा लगा'' कुछ समय उपरान्त बाबा ने अपने-प्राणों को ब्रह्मरन्द्र में चढ़ा दिया और शांत हो गये। अब बाबा सत्यलोक को प्रस्थान कर चुके थे।

उल्लेखनीय है कि बाबा हमेशा प्रणव का जाप (ॐ) किया करते थे और ब्रह्मलीन रहा करते थे। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि हमेशा सत्य लोक में ही निवास करते थे। वे वास्तव में जीवन मुक्त थे। उन्हें इस बाहरी संसार का बहुत कम आभास रहता था। वे इसमें रहते हुए भी नहीं रहते थे। जैसे कोई पक्षी पर्वत के शिखर से उतर कर मैदान में आ जाता है और मैदान से उड़कर बहुत उँचे पर्वत शिखर पर जा बैठता है। ठीक उसी प्रकार उन्हेंने अपने प्राणों को खींच कर सत्यलोक को प्रस्थान किया।

बाबा के देह त्याग के पश्चात् मैंने देखा कि बाबा की चारपाई के नीचे से एक सफेद कुत्ता निकल कर बाहर रास्ते में आ गया और दूसरी तरफ से काला कुत्ता आया उन दोनों कुत्तों में बहुत जोर की लड़ाई हुई। इस लीला का रहस्य मालूम नहीं! क्या घटना थी?

मैंने जाकर नारायण दास कोतवाल को ऊपर, धूला पर जाकर जगाया और उसे महाप्रस्थान की सूचना सुनाई उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वहाँ से चलकर बाबा के पास आये और उन्हें बड़ा भारी दुःख हुआ। प्रातः शव यात्रा हेतु सभी तैयारियाँ

हुई। लोगों ने काफी पैसा लगभग 1800/- रु. बाबा के अन्तिम संस्कार हेतु सेवा में भेंट किये।

डॉ. रांधेय राघव ने जब बाबा की देह त्याग का समाचार सुना तो वे एक फूलों की डलिया भर कर बाबा के पार्थिव शरीर पर अर्पण किया। राजा गजेन्द्र सिंह को एक स्वप्न जिसमें यह कहा गया–''कि तुम्हारे भाई चले गये हैं।'' (गुजर गये हैं) उनके भाई गोपालगढ़ भरतपुर में रहते थे उन्होंने सोचा उनमें से कोई गुजर गया होगा। लेकिन वैर आकर पता चला कि बाबा नहीं रहे। वे सब कुछ समझ गये बाबा अक्सर राजा गजेन्द्र सिंह जी को भाई कहा करते थे। रात्रि के स्वप्न का मतलव समझ गये। बाबा की मृत्यु का समाचार सुनकर आस-पास के गाँवों से भारी मात्रा में जन समुदाय उमड़ पड़ा। एक बहुत सुन्दर विमान तैयार कराया गया। जिसे राजा गजेन्द्र सिंह जी के ट्रेक्टर में लगाया गया। बाबा को उसमें विराजमान कर दिया गया। आगे-आगे बैंड-बाजे हरि कीर्तन की पार्टियाँ तथा झालर घंटे, शंखध्वनि करते हुए भक्तों का समुदाय चला जा रहा था। लघुकाशी के महान सन्त की यह अन्तिम यात्रा थी। जिसे बहुत भक्ति भाव से निकली जा रही थी। जनता की आंखों से अश्रु बह रहे थे। उस समय बस्ती में ऐसा कोई भी नहीं था जो अपने घरों सें निकलकर बाबा के दर्शनार्थ न आये हों। पूरी बस्ती में बाबा की शव यात्रा निकाली गयी। बयाना, भुसावर, भरतपुर जहाँ जिसने सुना, सब चल कर बाबा के अन्तिम दर्शनार्थ वैर आये। जैसा कि पूर्व प्रसंगों, के संस्मरणों में बाताया जा चुका है कि राजा गजेन्द्र सिंह जी से ट्रेक्टर चलवा कर, घुमवाकर किले की उत्तरी पश्चिमी बुर्ज के पास वाला भूखण्ड बाबा ने ले लिया था। सभी बस्ती वालों ने भी उसी स्थान को अन्तिम संस्कार के लिए पसन्द किया। बस्ती के लोगों ने राजा गजेन्द्र सिंह से इस भूखण्ड को बाबा के अन्तिम संस्कार के लिए देने का निवेदन किया वे बोले–''कि यह जमीन तो बाबा ने मुझ से पहले ही ले ली थी। सब कुछ बाबा का ही है। जितनी जमीन चाहो ले लो मैं और मेरा सर्वस्व उन्हीं का है।''

यह दिन अगहन सुदी छट्ट (छः) मंगलवार दिनांक 16.12.1958 (सम्वत् 2016) या। दिन के लगभग तीन बजे बाबा को अन्तिम संस्कार श्री नारायण दास जी द्वारा किया गया। जिन्हें अपना पूर्व में ही अपना शिष्य बनाकर उन्हें अपना धूना सोंप दिया था। अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। बाबा बृजलाला उस समय दिल्ली में थे। उन्हें अपने गुरु देव के महाप्रस्थान की सूचना स्वप्न में हुई। वे वहाँ से चल दिये। लगभग चार बजे जब बाबा का अन्तिम संस्कार हो रहा था। वे आकर सम्मलित हुए अपने गुरु के वियोग से बहुत दुःखी हुये। श्री कुन्दन दास जी उस समय बयाना कुण्डे के पास रहते थे। उसने सुना तो वह भी चलकर वैर आ गये। इस प्रकार बाबा का अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ, बाबा को चादर ओढ़ा रखी थी। लोग प्रसाद रूप में अपने बच्चों के ताबीज हेतु ले गये। इसके बाद संस्कार स्थल पर रामायण कीर्तन एवं भागवत के कार्यक्रम हुए। बहुत बड़ा भण्डारा किया गया।

ब्राह्मण तथा साधु और सभी बस्ती वाले आस-पास के क्षेत्रों की जनता सबने बाबा का प्रसाद पाया। प्रसाद में खीर पूवा तथा आलू का झोल बनाया गया। गाड़ियों में भर-भर के प्रसाद गली मोहल्ले में, प्रत्येक घर में वितरित किया गया। वैसा भण्डारा अभी तक बस्ती में किसी भी साधु का देखने को नहीं मिला, बड़ा आलौकिक नजारा था। अनेक प्रकार के साधु संत जिसमें कोई लोहे की आडबन्द लंगोटी लगाये हुए, कोई अघोरी था। अनेक प्रकार के वैष्णव एवं संन्यासी साधुओं की जमातें बाबा के भण्डारे में सम्मलित हुई। बाबा के "फूलों" को बाबा कुन्दन दास और बृजलाला बाबा के साथ में प. द्वारिका प्रसाद जी (सुनारी वाले) एवं उनकी माता भी साथ गयी थी। इलाहबाद त्रिवेणी में कुन्दनदास ने बाबा के अस्थि कलश को विसर्जित किया। कुन्दन दास बाबा के संस्मरण सुना रहे थे कि "जब मैंने गुरुदेव के अस्थि कलश को त्रिवेणी में विसर्जित किया तो मुझे गुरु के साक्षात दर्शन हुए (गंगा जल में) और वह कलश बहता हुआ सीधा बहुत दूर तक दिखाई दिया।

इस प्रकार गुरुदेव की महा प्रस्थान लीला का यह अध्याय पूरा हुआ।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 21

छोरा! मूर्ति छोड़ना नहीं है.....

एक व्यक्ति जो ग्राम बहज (डीग) निवासी था, बैंक सेवा में था। बाबा के पास आया करता था। बाबा उसे अक्सर दरोगा जी कहा करते थे। वह बाबा से कहता "मैं बैंक में नौकर हूँ, दरोगा नहीं हूं।" बाबा ने कहा–"हाँ मटा, तेरा ज्ञान न्यारा है।" कुछ समय पश्चात् वह कोई परीक्षा पास कर पुलिस में दरोगा बन गया। उसकी सेवा जयपुर में थी। बाबा के सत्यलोक गमन के पश्चात् वह वैर आकर गुरु दरबार में नारायण दास एवं कुन्दन दास की सेवा किया करता था। वर्तमान मन्दिर निर्माणधीन था। उसमें मूर्ति की स्थापना के लिए नारायण दास जी ने इस दरोगा से विचार विमर्श किया एवं उसे 500/- मूर्ति बनवाने के लिए नारायण दास जी जे दिये। मूर्ति जयपुर में वनवाई गयी। इस सम्बन्ध में कुन्दन दास ने अपना एक संस्मरण मुझे सुनाया। कुन्दन दास और बृजु सेठ (वक्तू) के दोनों जयपुर गये और उस दरोगा से सम्पर्क किया। मूर्ति तैयार हो चुकी थी लेकिन उसमें कुछ कमियाँ थी। एक तो गले में रुदाक्ष की माला बनाई हुई थी। दूसरे आकृति कुछ नीचे झुकी हुई लगती थी। चेडरे की बनावट भी उनके मूल स्वरूप से कुछ भिन्नता लिए हुए थी। कुन्दन दास को वह मूर्ति पसन्द न आयी और मन में दूसरी मूर्ति बनवाने की बात सोचने लगे। रात्रि में वहीं विस्राम किया। रात को सो रहे थे तो कुन्दन दास ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में गुरुदेव ने उनको दर्शन देकर

आदेश दिया–''छोरा! मूर्ति को छोड़ना नहीं हैं।'' उस रात बृजलाल बक्तू का जो साथ ही सो रहा था उसे भी स्वप्न हुआ की बच्चा छत से गिर गया है, चिन्ता की कोई बात नहीं। अपने-अपने स्वप्न की बातें एक दूसरे को सुनाई। मूर्ति को ले जाने का निश्चिय किया गया। मूर्तिकार से रुदाक्ष की माला बना दी गयी और मूर्ति को वैर लाकर मन्दिर में स्थापित करवा दिया गया। श्री बृजलाल वक्तू ने जो स्वप्न देखा था उसकी जानकारी यथार्थ निकली, बच्चा गिर गया था लेकिन खतरे से बाहर था। मूर्ति की लागत 700/- रु. थी जिसमें 200/- रु. उस दरोगा ने दिये थे।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि कुछ ट्रस्ट के सदस्यों एवं महन्त श्री जयरामदास जी महाराज के मन में वर्तमान मूर्ति को हटाकर बाबा की नयी मूर्ति बनवा के मन्दिर में स्थापना करने का विचार आया। लेकिन हमारे विरोध करने पर और मूर्ति की इस चमत्कारपूर्ण घटना को जो कुन्दनदास ने स्वयं हमें सुनाई थी। लोगों को मूर्ति न बदलने के लिए दबाव डाला गया। हमारे विचार पर लोगों ने सहमति प्रदान की और जिस मूर्ति को श्रद्धा भक्ति के साथ मन्दिर के संस्थापक श्री श्री 1008 श्री नारायण दास जी महाराज (दरबार साहब) की सहमति से जयपुर से वनवाकर लाये थे और स्वयं बाबा साहब ने स्वप्न देकर इसी मूर्ति को ले जाकर मन्दिर में स्थापना करने का हुक्म दिया था। वही मूर्ति वर्तमन में स्थापित है। आज मन्दिर का वैभव दिन दूना-रात चौगनी बढ़ता चला जा रहा है और दशों दिशांओं में बाबा के नाम की जय जयकार गूंज रही है।

वह इसी मूर्ति का चमत्कार है।

अलख पुरुष की आरसी, संतों का ही देह।

लखना चाहै अलख को, इन ही में लख लेय॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 22

छोरा! कुआँ में नहीं गिर जाय

अपने संस्मरण सुनाते हुए श्री बृजलाल गुप्ता ने बताया कि मेरी पत्नी के लगातार दो लड़कियाँ जन्मी तथा मेरे छोटे भाई सोनी के दो लड़के थे। समाज की कुप्रथा के अनुसार लड़की पैदा होने के कारण मेरी पत्नी की ज्यादा इज्जत नहीं थी और छोटे भाई सोनी को घरवाले अधिक महत्त्व देते थे। मेरी पत्नी को इस बात का बड़ा दुःख रहता था। वह मुझसे बोली कि–''लड़कों से घर में इज्जत होती है'' एक दिन की बात है मौहल्ले की कुछ औरतें बावड़ी वाले हनुमान पर जा रही थी। उधर से लौटते समय भरतपुर दरवाजे बाहर पुरवनी वाली बगीची में बाबा मनोहरदास

का आरान लगा हुआ था। उन सभी औरतों के साथ मेरी पत्नी भी दोनों लड़कियों को साथ लेकर बाबा के दर्शनार्थ वहाँ पहुंची। सभी औरतें बाबा के चरण छूकर चली गयीं। उन दोनों ने लड़कों जैसी शर्ट पहन रखी थी। उनमें से एक लड़की कुएं पर चढ़ गयी। बाबा बोले–"छोरा, कुँआ पर चढ़ गया है, कुए में नहीं गिर जायें"। मैंने कहा हुजूर छोरा नहीं छोरी है। बाबा बोले–"यह दूसरा" मैंने कहा यह भी लड़की है। बाबा कहने लगे–"जा मेरे मटा" ऐसा कहकर बाबा चुप लगा गये, मैं समझ गया कि हुजूर का आशीर्वाद मिल चुका है। कुछ समय पश्चात् मेरी पत्नी को एक पुत्र हुआ जिसका नाम अब सतीश है। इस प्रकार गुरुदेव सभी की मन की कामनाओं को सहज में ही पूरा कर दिया करते थे। जो भी उनके दरवार में जिस इच्छा से आता और सच्चे हृदय से बाबा से निवेदन करता, बाबा उसकी मनोकामनाएं पूरी करते। किसी को धन, किसी को पुत्र, किसी को काया निर्मल करना, किसी को मुकदमें में विजय, यहाँ तक कि मरे हुए को भी जीवनदान देने की शक्ति हुजूर में देखी गयी। वे किसी से कुछ चाहते न थे। वे सच्चे अर्थों में देवता थे। अनेक प्रकार की वस्तुएँ देकर भक्तों का कल्याण करना उनका ध्येय था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 23

अलख पुरुष की आरसी

जैसा की संसार के अन्दर साधु सन्तों की वेश-भुषायें, साम्प्रदायकि चिह्न, माला, तिलक आदि देखे जाते हैं। हुजूर महाराज में इस तरह का बाहरी दिखावा नहीं था। वे देखने में एक सामान्य इन्सान की तरह दिखाई देते थे। साधारण धोती कुर्त्ता एवं जाकिट, सिर पर लम्बे बाल, ऊपर काली टोपी पैरों मे जूते, कन्धे पर सॉफी, कभी-कभी वह अपनी पिण्डलियों में पुलिस के सिपाही की तरह गैटिस लपेट लिया करते थे। हाथ में दण्ड धारण करते थे। एक हाथ में चिलम जिसमें गांजा या सुलफा भरा होता था, लिए रहते थे। अपने मुंह से प्रायः "अलख" पुरुष मूर्ति "शाह गरीब निदाज तथा ॐ सोहंच शिव ॐ सोहं" जैसे शब्दों का अपनी मस्ती में उच्चारण करते रहा करते थे। उनके हृदय में ज्ञान का अथाह सागर हिलोरे लेता था। वे सच्चे मायने में परम संत थे। "अलख पुरुष" के रूप में साक्षात नर रूप में श्री हरि ही थे। किसी ने कहा है–"अलख पुरुष की आरसी, संतन का ही देह।

लखना चाहें अलख को, इनमें ही लख लेप॥

अर्थात् ईश्वर निर्गुण निराकार है उसको साकार रूप में अगर देखना है तो संतों के रूप में देखा जा सकता है। बाबा का व्यक्तित्व बहुत ही अलौकिक था। वे हमेशा किसी अज्ञात तत्व में डूबे रहते थे। ईश्वर के नाम जप को वे सभी साधनों

और सिद्धियों का मूल बताया करते थे। ईश्वर के नाम को न भूलना, अखण्ड उसका चिन्तन करते रहना, उनका स्वभाव था। वो कहा करते थे। कि –''याद है तो आबाद है, भूल गया तो बर्बाद है।''

''गुरु गुरु जप रे, यही तेरा तप रे'' गुरु नाम सार है और सब बेकार है।''

ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरु पदम्।

मंत्र मूलं गुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 24

बड़ी बहू का छोरा

एक बार एक नव युवक सन्त गोरे-भूरे, रंग का, नयी उम्र वाला योग्य गुरु की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। जहाँ भी सुनता अनेक संतों और साधुओं के पास जाया-आया करता था। एक बार कैलादेवी झील में वह आया हुआ था। वहाँ पर उसने वैर में स्थित सिद्ध संत बाबा मनोहर दास बाबा के बारे में सुना। वह झील के बाड़े से चलकर वैर आया। यह बात लगभग सन् 1949 या 50 की है। उसने अपने मन में यह निश्चित कर रखा था कि–जिस महात्मा से मैं अन्तः करण से प्रभावित हूंगा उसी को अपना गुरु बनाऊँगा।'' बाबा का आसन उस समय गिरधारीदास के मन्दिर में लगा हुआ था। धूना चेत रहा था। भक्तों का समुदाय बैठा हुआ था। वह साधु बाबा के दर्शनों के लिए वहाँ पहुंचा। बाबा बोला–''अरे! बड़ी बहु का छोरा, तू कहाँ भूला भटका फिरता है''– बाबा उससे बड़े प्रसन्न होकर मिले। वह साधु उस समय फलहारी था। अन्न का सेवन नहीं किया करता था। बाबा ने एक दिन उसके लिए उड़द की दाल और एक रोटी भिजवायी। उसने लेने से इन्कार किया और मन में बोला–अरे! ये कैसे सिद्ध हैं कि मैं अन्न नहीं खाता हूँ फिर भी मुझे दाल रोटी भेज दी, लोगों ने उसे समझाया कि ये महान सन्त का प्रसाद है इसका त्याग मत करो। तुम्हारा कल्याण होगा। इसने उनको लेकर बड़े प्रेम से पा लिया। बाबा उसको बहुत प्रेम करते थे। यहाँ तक कि अपने साथ भोजन भी करा लिया करते थे। वह साधु भी बाबा से बहुत प्रभावित था क्योंकि बाबा ने शुरु में ही अपनी सर्वज्ञता का भान करा दिया था। बाबा ने उसे बड़ी बहु का छोरा कहा, जिसका रहस्य उसने यह बताया कि घरवाले उसकी माँ को बड़ी बहु के नाम से ही कहा करते थे। इस शब्द को सुनकर ही उस साधु की आँखें खुल गयी और उसने बाबा को अपना गुरुदेव स्वीकार किया। इस तरह वह काफी समय तक बाबा के पास रहा। बाबा ने उसे गृहस्थी होने का हुक्म दिया और गृहस्थाश्रम में रहते हुए

नेक नियति से परिश्रम करते हुए प्रभु की आराधना करते रहने का हुक्म दिया। वह अपने उत्तर प्रदेश, मेरठ जिले का रहने वाला था। इसका नाम डॉ. राम दुलारे वर्मा था। जिसे लोग "सोनी साहब" के नाम से पुकारते थे। उन्होंने शादी की। उनके एक पुत्री उत्पन्न हुई तथा घर से वैराग्य ले लिया। वह अपने गुरु दरबार में आया-जाया करता था।

एक बार हुजूर अपनी मस्ती में विराजे हुए थे। मुझे (बृजलाल) बोले- "कागज और कलम ला" मैं उस समय चुंगी क्लर्क था। कागज और पैन मेरे पास ही थे। हुजूर ने कुछ छन्द जिसमें साधना का रहस्य भरा हुआ था और साधुओं के लिए बहुत उपयोगी निर्देश थे। मुझे लिखाये और कहा कि इन्हें इसे दे दो। मेरी हस्तलिपि से वह कॉपी जिसमें लगभग 10 या 12 छन्द लिखे हुए थे। मैंने सोनी साहब को दे दिये। वह उसे लेकर अपने गाँव चला गया। इसके पश्चात् लगभग 20 वर्ष बाद पुनः वैर आया। उसका रूप एक नेता जैसा था। सफेद टोपी, सफेद खद्दर का कुर्त्ता घुटनों से नीचे तक, पाजामा पहने हुए, सबसे पहले वह मन्दिर में बाबा की समाधि पर गया और फिर बाबा कुन्दन दास के पास जो उस समय मन्दिर के सामने वांयी ओर स्थित जस्सा की धर्मशाला में अपने तखत पर विश्राम किये हुए थे। वह बाबा कुन्दन दास के पास जाकर बैठ गया। बाबा बोले-"कहाँ का नेता है" वह बोले पहचान लो कहाँ का नेता है। कुन्दन दास जी बोले-"आवाज से सोनी से लगते हैं।" वह बोला-"गुरुभाई ठीक पहचाना" वह कुन्दन दास को बहुत सम्मान देता था और भाई साहब कहकर उच्चारण किया करता था। वहाँ से चलकर मेरी दुकान पर आकर खड़ा हो गया। मुझसे बोला-"पहचानते हो मुझे" यद्यपि गुरु दरबार मे मेरे साथ खूब रहा था लेकिन समय के प्रभाव से और वेश-भूषा के बदल जाने से मैं उसे पहचान न सका। उसने अपने बैग से एक पुरानी कॉपी जिसमें मेरे हस्त लिखित छन्द लिखे थे। मेरे हाथ में थमायी। मैं तुरन्त अपना हस्त लेखन पहचान गया और पुरानी घटना मेरे दिमाग में याद हो आयी। अब मैंने उन्हें पहचान लिया था। इसके बाद वह पुनः वैर आया और धूना पर स्थित आस्रम में निवास किया।

शाला के ऊपर नया बरामदा और झीना तथा पानी की टंकी जनता का सहयोग लेकर उसने बनवायी थी। नवयुवक वर्ग को बाबा के समय के संस्मरण वह सुनाया करता था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 25

कोढ़ी को काया प्रदान करना

ग्राम जघीना निवासी हरी सिंह पहलवान, जिसके सम्पूर्ण शरीर में कोढ़ था। अपने दुःख से दुःखी होकर बाबा की शरण में आया वह अपनी वीमार काया से बड़ा ही दुःखी था क्योंकि उसके घावों से दुर्गन्ध आती रहती थी। लोग उससे घृणा करते थे। अपनी दशा उसे असहनीय थी। वह आत्म हत्या करने पर भी उतारू था। वह बाबा की तपोस्थली (धूना) के सामने वाली धर्मशाला दरामदे में पड़ा रहता था। बाबा के लिए जो भोजन प्रसाद आया करता, उसे हुजूर उसके लिए भेज दिया करते। वह लगभग 6 माह तक बाबा के दरबार के सामने पड़ा रहा और अन्त में बाबा ने अपनी कृपा दृष्टि से उसे पूर्ण स्वस्थ कर दिया। लगभग 10 या 12 वर्ष बाद वह पुनः वैर आया। लम्बा पूरा बलिष्ठ शरीर, पर चन्दन का लेप, भगवा वस्त्र धारी एक महात्मा जब मेरी (स्व. गंगा सहाय नाई) और पैर छूने के लिए आगे बढ़ा तो मैंने उसे टोका, महाराज आप महात्मा होकर हमारे पैर क्यों छूते हो, हमारे ऊपर पाप चढाते हैं, लेकिन वह नहीं माना वहाँ उपस्थित सभी लोगों के चरण छूने लगा लोगों के मना करने पर वह बोला इस लघु काशी वैर का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति मेरे लिए पूज्य है, यहाँ की तो मिट्टी कंकड़ भी मेरे लिए पूजनीय हैं, क्योंकि यह हुजूर महाराज श्री श्री 1008 श्री बाबा मनोहर दास जी की जन्मभूमि और तपोभूमि है। बाबा महाराज ने मेरी रोगी काया को कंचन बना दिया, उनकी कृपा से मैं पुनः समाज में सम्मानपूर्वक रह रहा हूँ। वह महात्माँ वही हरी सिंह पहलवान था जो बाबा के सत्यलोक प्रस्थान के कुछ वर्षों बाद वैर आया था। यह संस्मरण गंगासहाय ख्वास ने सुनाया था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 26

दिव्य दृष्टि प्रदान करना..

एक बार एक शान्त एवं गंभीर स्वभाव वाला व्यक्ति बाबा के दरबार में आया। वह बाबा के समीप ही बैठा रहता, उनके आदेशानुसार सेवा करता रहता, हुजूर कुछ खाने को देते तो खा लेता नहीं तो पड़ा रहता, बाबा के आदेश से कभी पेड़ में पानी देता रहता तो कभी धूने के समीप सफाई आदि कार्य में लगा रहता। उसे दिव्य ज्ञान की चाह थी और योग्य गुरुदेव की तलाश करता हुआ लघुकाशी वैर तक आया था उसने हुजूर बाबा मनोहरदास का नाम सुना था। अतः वह उनसे

दिव्य ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से यहाँ उनकी सेवा में आया था। कहते हैं कि वह लगभग 2 महीने तक बाबा के धूने पर सेवा करता रहा। एक दिन लोगों ने देखा कि वह (शाला) में मृतवत पड़ा है, उसका शरीर मलमूत्र से सना हुआ, बड़ी ही घृणास्पद स्थिति में पड़ा हुआ था।

बाबा महाराज अपने धूने के पूर्वी द्वार के चबूतरे पर शान्त मुद्रा में चिलम हाथ में थामे हुये अपने ध्यान में मस्त विराजे हुये थे। तभी किसी व्यक्ति ने उनकी शान्ति भंग की और कहा–"बाबा! आपकी शाला में एक व्यक्ति मरा पड़ा है।" बाबा बोले अरे! कैसे मर गया साले जाने कहाँ-कहाँ से आकर यहाँ मरते हैं। फेंको इसे यहाँ से" इतने में मैं वहाँ पर पहुँच गया। बाबा ने मुझसे नगरपालिका से हरिजन कर्मचारी बुलाकर उसे घूरे पर फिकवाने के आदेश दिया। मैं उनकी आज्ञा पालन करने हेतु दुर्गा परसादी हरिजन को लेकर वहाँ पहुंचा तो हुजूर ने कहा–"फेंक दो साले को घूरे पर"। हम उसे बड़ी मुश्किल से उठा पाये क्योंकि वह गन्दगी में सना पड़ा था। जब हम उसे घूरे पर फैंकने जा रहे थे तो पास में ही दूकान करने वाले भोलीराम धाकड़ ने हमसे गिड़गिड़ा कर कहा कि इसे घूरे पर मत फैंको कुत्ते खा जायेंगे इसे तू धर्मशाला के बरामदे में रख दो।" उसके कहने से हमने ऐसा ही किया। बाबा के धूने के सामने वाली धर्मशाला में जिसमें अब डॉ. रांग्येराघव पुस्तकालय है डाल दिया। दूसरे दिन हमने देखा कि वह व्यक्ति पूर्ण स्वरूप एवं चेतन अवस्था में बाबा के सामने खड़ा होकर कहते लगा कि "मैं राम हूँ! मैं ही कृष्ण हूँ मैं शिव हूँ मैं, मनोहर दास हूँ।"

बाबा के हाथ में एक नीम का डण्डा था, उसके ऐसा कहते पर वाव ने बड़े ही जोर से उसकी पीठ में एक डंडा मारा, वह दूर भाग गया और कुछ देर वाद पुनः बाबा के साामने पूर्ववत दोहराने लगा "मैं ही राम, मैं ही कृष्ण, मैं ही शिव तथा मैं ही मनोहरदास हूँ।" बाबा ने उसकी पीठ में पुनः जोरदार डंडा मारा और वह फिर भाग गया इस प्रकार तीन बार उसे डंडे लगाये गये। बाबा ने इसके ज्ञान चक्षु खोल दिये थे। कुछ समय पश्चात् ज्ञात हुआ कि वह व्यक्ति जमुना किनारे आगरा कचहरी घाट के पास ही "कुल-कुल पाण्डेय" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह संस्मरण मुझे श्री बृजलाल गुप्ता (विरजू) ने सुनाया था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 27

तेरा ध्यान न्यारा है...

बाबा मनोहर दास जी महाराज को भूत भविष्य और वर्तमान की पूर्ण जानकारी थी। वे अपने ज्ञान से जीवों के आन्तरिक संकल्प विकल्प को तथा पूर्व में सोची गई

बात को भी जान लेते थे। अनेकों भक्तों और प्रेमियों के संस्मरण इस बात के प्रमाण हैं। मुझे एक बार सीता कुण्ड पर भागवत के आयोजन में पधारे एक बुजुर्ग महात्माँ श्री भीष्म बाबा ने अपना एक पुराना संस्मरण सुनाया। बोले–"मैं एक बार अपने कुछ साथियों के साथ एक कुस्ती के दंगल में लड़ने के लिए वैर में गया साथियों ने कहा कि-यहाँ पर एक महान संत मनोहरदास जी रहते हैं, चलो उनके दर्शन करके आएँ। सबका एक मत हो गया और दर्शनार्थ चल दिये रास्ते में मैंने अपने साथियों से कहा कि बाबा सरभंग मत के हैं इसलिए मैं तो उनसे प्रसाद नहीं लूंगा। इस प्रकार की बातें करते-करते हम बाबा के आश्रम पर नहर के किनारे बड़ के पेड़ के नीचे आ गये, जहाँ बाबा अपनी मौज में विराजे हुए थे। हमने बाबा को प्रणाम किया, बाबा ने कुछ पहलवानों की पीठ विशेष रुप से तीन-तीन बार जोर से थपथपाई और अपने पास बिठाया, उनके पास एक कुल्लड़ रखा था। अपने हाथ से उसमें से पेड़ा निकाल कर सबको प्रसाद दिया लेकिन मुझे छोड़ दिया, मेरी ओर सिर हिलाते हुए कहा कि भाई तेरा ज्ञान न्यारा है" अपने एक सेवक को सम्बोधित करते हुए बोले "छोरा, जा रामजीलाल की दुकान से इनको अलग से प्रसाद ला दे क्योंकि यह वैष्णव पट्ठा है।" मैंने तुरन्त बाबा के चरण पकड़ लिए और हाथ जोड़ कर बोले–"हुजूर मैं भी इसी प्रसाद को ले लूंगा। ऐसा अनुभव हुआ कि रास्ते में हमारी जो बातें हो रहीं थी बाबा ने अपने आश्रम पर बैठे-बैठे ही सुन ली। उस दिन मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि बाबा पहुँचे हुए सिद्ध पुरुष हैं, जिन पहलवानों की पीठ विशेष रुप से ठोकी थी, दंगल में उनकी विजय हुई। इतना ही नहीं वे दूसरे दंगलों में विजयी रहे। महान् संत का आशीर्वाद जिसको मिला फिर भला वह कहीं रुक सकता है?

उपर्युक्त विवरण संस्मरण से यह सिद्ध होता है कि बाबा से कुछ छुपा नहीं था तथा जिसके हृदय में जो भाव छुपा होता था, उसकी उन्हें स्पष्ट जानकारी हो जाती थी उनका व्यवहार भावानुसार ही होता था। वे कहा करते थे–

साईं से साँचे रहो, संतों से सद्भाव।

दुनिया से ऐसे रहो, जैसा जाका भाव।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। (गी. 4/11)

अर्थात् जो मुझे भजता है, मैं भी उसे ठीक उसी प्रकार से ही भजता हूँ। बाबा का व्यवहार यद्यपि सबके साथ सामन था न कोई उनका मित्र था और न ही शत्रु, जिस प्रकार गंगा को पवित्र धारा में सभी जीव स्नान कर अपने तन मन को पवित्र किया करते हैं, ठीक उसी प्रकार बाबा के दरबार में सभी लोग आते थे और जिसका जैसा भाव होता उसी प्रकार अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति किया करते थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 28

अन्तर्यामी..... सोन हलुआ

"बाबा के दरबार में हर रोज दूर-दूर से लोग बाबा के दर्शनार्थ आया करते थे। एक दिन एक भक्त दिल्ली से आया। वह बाबा की भेंट स्वरूप एक बड़ी थैली में सोन हलुआ भरकर लाया। मैं (गंगा सहाया नाई) और कुछ अन्य लोग बाबा के पास बैठे थे। हलवा देखकर मेरे मन में उसे पाने की इच्छा उदय हुई। बाबा अपने ध्यान में मग्न विराजे हुए थे। कुछ देर तक अपनी धुन में बैठे रहे। धीरे से खड़े हुए और सोन हलवा की थैली को अपने हाथ में उठाकर बोले–"गंगा सहाया। चल ऊपर मेरी "शुद्धि वना दे" ऐसा कहकर मुझे ऊपर की कोठरी में ले गये। मैंने "शुद्धि (हजामत) वना दी। इसके बाद सोन हलवा का वह पूरा थैला मुझे देते हुए कहा–"ले इसे छुपा के ले जाना, नहीं तो नीचे कोई तोपैंते खुला लेगा" ऐसा कह कर वह पूरा थैला मुझे पकड़ा दिया। इसमें कम से कम दो किलो से अधिक हलवा रहा होगा।"

यह संस्मरण मुझे गंगा सहाय नाई ने एक दिन अखाड़े पर सुनाया इससे इस बात की जानकारी मिलती है कि वे अन्तर्यामी थे। हलवा में गंगा सहाय की नियत थी। बाबा ने उसके मन को जानकर पूरा ही उसे दे डाला। वे स्वयं कोई वस्तु स्वीकार नहीं करते थे। भेंट में आई हुई वस्तु को या तो उपस्थिति सभी लोगों में बाँट देते या किसी एक को ही इसे उठा ले जाने का आदेश कर देते थे। उनकी लीला अपार थी उनकी विचारधारा किस समय क्या हो, कोई जान नहीं सकता। वे हमेशा "गुरु गुरु" आलख पुरुष मूर्ति" की रट लगाया करते थे। कभी-कभी उनका व्यवहार एक सामान्य जन का सा होता तो उनकी आँखें किसी रहस्यमई अज्ञात तत्व में डूबी नजर आती थी। उनका व्यक्तित्व एक ऐसा दस्तावेज था कि जिसे पढ़ना और समझना किसी के बस की बात नहीं थी। उनके जीवन काल में, वैर नगरी में अनेकों विचित्र संतों महात्माओं के दर्शन हुआ करते जो स्वयं बाबा के दर्शनों के लिए और अपनी भाषा में उन्हें आध्यात्म के गूढतम रहस्यों को समझा दिया करते थे। बाबा स्वयं चलते फिरते वेदांत थे। पुराण-शास्त्रों में जो आध्यात्म की जटिल बातें लिखी हैं, उन्हें वे सीधी और सरल बोधगम्य भाषा में अपने भक्तों को समझा दिया करते थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 29

प्रारब्ध का भोग अटल होता है. . .

"एक बार बाबा तहसीलदार की बगीची (जो वर्तमान में पटवार पर बन

चुकी है) में चारपाई पर लेटे हुए थे। सुबह मैंने आकर बाबा को नमस्कार की और भोजन के लिए निवेदन किया लेकिन बाबा ने मना कर दिया। वे चारपाई में पड़े हुए थे जोर से बुखार आ रहा था। मैं अपने घर गया और भोजन लेकर पुनः आग्रह किया लेकिन हुजूर पड़े-पड़े कराह रहे थे। जब अधिक आग्रह किया गया तो वे उठकर बैठे हो गये तथा खाट से खड़े होकर पास की एक पटिया (पत्थर) पर बैठ गये। मैंने देखा अभी यह बुखार में कराह रहे थे और अब कुछ नजर नहीं आता? बोले "छोरा नहीं माने तो ला कुछ खाय लेता हूँ।" मैं बोला–"बाबा आप बड़ी मक्कड़ी बनाते हो, अभी तो तुम बुखार का बहाना बना रहे थे और अब आपको कुछ नहीं है।" बाबा चिलम का कश खींचते हुए बोले-"मेरे मटा–तू झूठ माने देख मोय तिजारी चढ़ रही है।" अब मैंने उसे चारपाई पर रख दिया है। मैंने प्रत्यक्ष देंखा कि चारपाई हिल रही थी। मैंने बाबा से कहा-"कि आपने इसे चारपाई पर क्यों उतार दिया है इसे आप इस पीपल के पेड़ से लटका दो ताकि यह तुम्हें फिर परेशान नहीं करे।" बाबा बोले–"मेरे मटा! यह मेरे प्रारब्ध का भोग है, इसे मुझे ही भोगना है। अगर अभी भी मैं इसे अपनी तपस्या के बल से दूर कर दूं तो यह अवसर पाकर पुनः लौटेगा। प्रारब्ध भोग अटल होता है उसे भोग कर ही समाप्त करना पड़ता है। बाबा ने कुछ भोजन किया और पुनः अपनी चारपाई में लेट गये। अब पुनः उन्होंने तिजारी को अपनी शरीर में ले लिया और पीड़ा से कराहने लगे।

(यह संस्मरण मुझे श्री जगदीश जी पुरोहित ने बाबा के धूने पर सुनाया था।)

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 30

मेरे मटा! तेरौ ज्ञान ध्यान न्यारा है

घटना लगभग सं. 1948 ई. की है। बाबा भरतपुर के अनाह गेट की ओर से नुमाईस देखकर आ रहे थे। उनके साथ हरीशंकर तहसीलदार रतन सिंह तथा कुछ और लोग थे। बाबा अपनी धुन में मस्त होकर चल रहे थे रास्ते में पुलिस चौकी पड़ती थी। आप वहीं कुछ देर रुके चौंकी पर एक धोबी जाती का सिपाही था। उससे चिलम मांगकर पीने लगे। गढ़ और चौकी के बीच में पूर्व की ओर रास्ता था, मेरी चौकी पर ड्यूटी थी। बाबा को धोबी के साथ चिलम पीता देख, मैं नहीं बोला। इसके बाद वे वहाँ से चलकर मेरी तरफ आए। मैंने उठकर प्रणाम किया। आप बोले– "छोरा बड़ा घमण्ड आ गया है। मैं बोला–बाबा मैं जब यहाँ हूँ तो फिर आप सीधे यहीं क्यों नहीं आए, धोबी के पास चिलम पीने की क्या आवश्यकता थी।" बाबा ने हमेशा की तरह अपना वाक्य दोहराया "मेरे मटा-तेरा ज्ञान ध्यान-न्यारा है। इसके

बाद हुजूर पास चबूतरे पर जिस पर कोई सफाई नहीं थी। बैठ गये। मैंने चबूतरे की सफाई कराई और आसन बिछवाया, चाय बनवाई गई। सब को चाय वितरित की लेकिन खुद बाबा ने नहीं पी। मैंने देखा की हुजूर ने सारी चाय वहाँ उपस्थित भक्तजनों में वितरित कर दी है लेकिन खुद ने नहीं ली। दोबारा चाय बनाई गयी और फिर वहीं वितरण प्रक्रिया शुरु की कभी इसे दे कभी उसे दे, लेकिन खुद नहीं ले रहे थे। मैंने नाराजगी के साथ आग्रहपूर्वक कहा-आप भी तो पियो लेकिन कोई ध्यान नहीं जब विशेष आग्रह किया तो बोले ''ला तू नहीं मानेगा।'' इसके बाद साथ के लोगों से बोले'' आज तो छोरा के यहीं ठहरेंगे।'' और लोगों को विदा करके खुद मेरे पास ठहर गये। अपनी धुन में बैठे-बैठे चिलम पीने रहे। भोजन के बारे में पूछा तो बोले'' भूख नहीं है।'' मैंने भोजन तैयार कराया, थाल में रखके उनके सामने लाकर भोजन का निवेदन किया। बाबा ने कहा-भूख नहीं ''थाल को उठाकर रख दिया मुंशी नन्हे सिंह जी भी उन दिनों वहीं थे। दरोगा रघुनाथ प्रसाद जो सायर में पटवारी थे श्री नन्हे सिंह के साथ वहाँ आ गये। बाबा ने भोजन का थाल उनको दे दिया। दोनों भोजन करके वहाँ से चले गये। मेरे पास एक इटामड़े ग्राम का ब्राह्मण का लड़का रहता था वह भोजन बना दिया करता था। उसकी इच्छा नुमाइस देखने की थी। रात को 10 या 11 बजे का समय हो गया। बाबा से मैंने कहा हुजूर अब तो भूख लगी होगी भोजन तैयार करा दूं। लेकिन आप बोले ''नहीं'' मैं भूखा नहीं हूँ। यह नुमायश देखने को जा रहा है इसे जाने दे।'' मैंने कहा ठीक है। इसे जाने देता हूँ। ऊपर चलो मैं बना देता हूँ। लेकिन कोई जबाब नहीं। मैंने विशेष आग्रह किया लेकिन भोजन नहीं किया। बाजार से 1 किलो दूध लाया, बड़े भारी आग्रह से कुछ भोग लगाया फिर जाने की जिद करने लगे, उस समय रात्रि के 12-1 बजे का होगा। मैं बोला-''इस समय कहाँ जाओगे। ''तहसीलदार हरीशंकर के यहाँ जाकर सोऊँगा और कहकर चले। मैं भी पीछे-पीछे चला लेकिन बाबा बोले ''छोरा तू जा, मेरे पीछे क्यों आता है।'' जब मैं नहीं लौटा तो गली में से एक पत्थर उठाया और मुझे धमकाया। कभी हाथ के डण्डे से मारने के लिए हीलाना। मैंने सोचा कि बाबा की इच्छा नहीं तो इनको अकेला जाने दूं। मैंने पीठ मोड़ी ही थी और लौटकर चलने लगा, एक बार पुनः मैंने पलट कर देखा, लेकिन रोड पर कोई नहीं अचानक अर्न्तध्यान हो गये।

(यह संस्मरण मुझे श्री जगदीश जी पुरोहित ने एक बाबा के धूने पर सुनाया था।)

बाबा भाव के भूखे थे उनकी दृष्टि में वस्तु और व्यक्ति किसी का महत्त्व नहीं था भाव के बिना वस्तु की कोई कीमत नहीं। वे मेहनत से कमाई गई सूखी रोटी को भगवान का महा प्रसाद मानते थे और अन्याय से कमाएँ गये धन को हाथ का पैसा ''मानकर उसके द्वारा बनाये गये भोजन को अनिष्टकारी मान कर उसका त्याग करते थे। ऐसे धन के उपयोग से साधना में विघ्न उपस्थित हो जाता है।

मानव का पतन हो जाता है। उनकी दृष्टि पारदर्शी थी उन्हें सब कुछ रहस्य का ज्ञान उसी प्रकार हो जाता था जैसे शीशे के अन्दर रखी गई वस्तु को आसानी से जाना जा सकता है। उनकी दृष्टि मानव के हृदयस्थ प्रेम पर रहती थी। जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय का उनके यहाँ कोई महत्त्व न था। भाव की प्रधानता से वे धोबी की चिलम बड़ी रुचि के साथ माँग-माँग कर पीते और विशेष आग्रह करने पर भी ब्राह्मण के यहाँ भोजन नहीं करते थे। उनका ज्ञान ध्यान न्यारा और अनौखा था। कहते हैं कि एक बार राजा जी के यहाँ से भंगिन झाड़कर आ रही थीं। उसकी डलिया में रोटी रखीं थी रास्ते में बाबा ने उससे डलिया उतरवा के उसमें से एक रोटी लेकर खाने लगे इसी प्रकार एक बार आप धूने पर विराजमान थे, एक माली जाति की लड़की अपने बाग पर रोटी लेकर जा रही थी, आप बोले-बेटी एक रोटी ला उसकी पोटली से एक रोटी लेकर हाथ पर रख के बड़े प्रेम से पाने लगे। कहने का तात्पर्य है कि उनकी दुनिया जाति, विरादरी तथा सम्प्रदाय से रहिते थी। उन्हें मेहनतकश इन्सान से लगाव था। वे अक्सर कहते थे "मटा भाद गति का भोजन आनंददायक होता है।"

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 31

जा मेरे मटा, तू आमन में ही आयेगा.....।

एक बार मेरी नियुक्ति उन दिनों हलैना विद्यालय में थी। उस समय हमारे प्रधानाध्यापक जो श्री नत्थी लाल जी नगायच थे। मेरा उनका किसी बात को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया था। वह प्रायः मुझसे रुष्ट रहते थे। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को शिकायत कर दी। मेरा स्थानान्तरण रूपवास विद्यालय में करा दिया। उल्लेखनीय कि आवागमन के साधनों के आभाव के कारण रूपवास को उस समय हम लोग "कालापानी कहा करते थे। वहाँ स्थानान्तरण करके एक तरह से मुझे दण्डित किया गया था। आने-जाने में मुझे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। यह बात आषाढ मास सन् 1941 की ही। मैं अपने गाँव वैर आया हुआ था और फिर यहाँ से अपनी ड्यूटी पर रूपवास जाने के लिए बयाना जाने वाली बस में बैठने की तैयारी में था। इतने में बाबा मनोहरदास जी महाराज घूमते हुए उधर से आ निकले। मुझसे बोले-"देवीदास।" चार आने पैसे देना" मैंने अपनी जेबों को तलाशा। जेबों में खुल्ली चव्वन्नी न थी अधिक बाबा लेते न थे इतने में ही बस चल दी और चलते-चलते मैंने बाबा से कहा–कि एक माह बाद सावन में आ रहा हूँ आपको सावन में पैसे दूंगा। "बाबा ने कहा–"चल हट तू आमन में ही आयेगा।" बाबा की अटपटी वाणी का अर्थ मेरे पहुंच से बाहर था। लगभग 15 दिन बाद मेरा स्थानान्तरण भुसावर के विद्यालय में हो गया। उस समय बाबा की वाणी का अर्थ

मेरी समझ में आया क्योंकि भुसावर हमारी तहसील में आमें के लिए ही प्रसिद्ध है "तू" आमन में ही आयेगा "का अर्थ मुझे स्पष्ट हो गया था। बाबा ने मुझे उस दिन भुसावर स्थानान्तरण का आशीर्वाद दिया था।

इससे सिद्ध होता है कि वादा की वाणी सिद्ध थी। वह एक वचन सिद्ध महात्मा थे। अपनी वाणी से जो कुछ कह दिया करते वह प्रायः अटल सत्य होता था वैसा ही होकर रहता था। वह एक अनौखे भविष्य वक्ता थे। यह संस्मरण मुझे श्री केशव देव जी ने सुनाया, जो उन्हें चाचाजी स्व. श्री नत्थीलाल जी चौबे ने सुनाया था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 32

तेरी बस का ज्ञान ध्यान कुछ और है. . . .।

बात लगभग 1951 की है मैं उस समय जब महारानी श्री जाया कॉलेज भरतपुर में पढ़ता था। एक दिन रेल द्वारा अपने गाँव वैर आ रहा था। सायं को वयाना से वैर आने वाली बस में बैठा उस बस का ड्राइवर प्रभाती का था। अचानक कहीं से (तहसील की तरफ से) बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज अपनी मस्ती में घूमते हुए पंचायत समिति चौराहे की तरफ चले आये। जहाँ से बस वैर आने की तैयारी कर रही थी। उल्लेखनीय उस समय बयाना से वैर कम ही बसें चला करती थीं। यह अन्तिम बस थी। रात्रि के लगभग 9 बज चुके थे। बाबा को वहाँ आया हुआ देख ड्राइवर प्रभाती मौले के ने बाबा से निवेदन किया कि हुजूर बस में बैठिये, अभी चलता हूँ। बस उस समय सवारियों से खचाखच भरी हुई थी। और वह और सवारियों को चढाने का प्रयास कर रहा था। बाबा ने बस को देखा और बोला कि "तेरी गाड़ी का ज्ञान ध्यान कुछ और है" ऐसा कहकर बाबा अपनी मस्ती में झूमते हुए उस अंधेरी रात्रि में वैर की तरफ चल पड़े। यह दृश्य मेरे अतिरिक्त और भी लोगों ने देखा कि उस अन्धकार में कुछ दूर तक सिगरेट की चमक दिखाई पड़ी और फिर अदृश्य हो गयी। लगभग 10 मिनट बाद हमारी वह बस वैर के लिए रवाना हो गयी लेकिन रास्ते में हमें कहीं भी बाबा के दर्शन नहीं हुए।

लगभग एक घण्टे बाद रात्रि के दस बजे गाड़ी वैर आकर बस स्टैण्ड पर रुकी तो बाबा को लोगों ने अपनी तपोस्थली (धूना पर) के पूर्वी द्वार पर जहाँ अब लोगों ने दुकानें बनवादी है। उसी स्थान पर बाबा के तपोस्थली का पूर्वी द्वार था और आगे कच्चा चबूतरा। बाबा को अपने निर्धारित आसन में, हाथ में चिलम लिए हुए अलख पुरुष मूर्ति "का घोष करते हुए सुना। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने देखा कि "अभी-अभी बाबा बयाना दिखाई दिये थे और इतनी

जल्दी वैर जा पहुंचे।'' इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि बाबा में आलैकिक शक्तियाँ थीं और उनके गुरु का ज्ञान न्यारा था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 33

जा तुझे चौरासी से पार किया।

बाबा के बारे में एक सही संस्मरण मुझे चाचाजी स्व. श्री नत्थीलाल जी ने सुनाया था। मैं एक बार हाई स्कूल की परीक्षा देने मथुरा गया था। इलाहबाद बोर्ड से उस समय परीक्षायें हुआ करती थीं। हमारी परीक्षा के सेन्टर मथुरा चौरासी पर था। परीक्षा देकर हम वैर आ गये। एक दिन जब मैं बाबा के धूना की तरफ से घूम रहा था। बाबा को मैंने प्रणाम किया और उन्होंने मुझसे कहा–''देवीदास! चल हट, तुझे चौरासी से पार किया।'' उल्लेखनीय है कि बाबा प्रायः लोगों का नामकरण अपनी ओर से कर दिया करते। जब भी वह व्यक्ति बाबा के पास पहुंचता उसे उसी नाम से सम्बोधित करते थे। चाहे वहाँ वह, कितने ही समय में पहुंचा हो। मुझे बाबा अक्सर देवीदास नाम से सम्बोधित किया करते थे। बाबा की उस वाणी का अर्थ उस समय समझ में नहीं आया। मैं सोचने लगा कि क्या बाबा ने मुझे 84 लाख योनयों से छुड़ा दिया था। इसका कोई और अर्थ है। मेरा माथा ठनका कि ''बाबा ने 84 का अंक लगाने के लिए तो प्रेरित नहीं किया खैर वो अन्तरर्यामी थे। मेरे स्वभाव से और मुझसे अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए दडा लगाने की प्रेरणा क्यों करने लगे। इन्ही विचारों की उधेड़-बुन में घर आ गया। दूसरे दिन हमारी इन्टरमीडिएट की परीक्षा का रिजल्ट आया और उसमें सफल रहा। मैंने अपने एडमीशन कोई को देखा कि कहीं मेरा रोल नम्बर गलत तो नहीं देख लिया लेकिन उसमें स्पष्ट लिखा हुआ था। चौरासी खम्बा, नामांक 84। इसको देखकर मुझे बाबा के बोले हुए वचन ''देवीदास! जा तुझे 84 पास किया।'' का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो गया। इन वाक्यों से बाबा ने मुझे परीक्षा में उत्तीर्ण होने का आशीर्वाद दिया था। इससे सिद्ध होता है कि बाबा एक अनौखे भविष्य वक्ता थे। भूत, भविष्य, वर्तमान में जो भी कुछ घटित होने वाला है, उसका पूर्वाभास उन्हें हो जाया करता था।

प्रत्यक्ष दर्शियों एवं समकालीन लोगों द्वारा सुनाये संस्मरणों द्वारा भी यह बात स्पष्ट होती है।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 34

कहाँ डोलता है मेरे मटा .....?

यह प्रसंग लगभग सन् 1947 का है। बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज उस दिन बयाना के बाजार में "गिर्राज मोटल्ली" (वैद्य) की दुकान पर बैठे हुये थे। मैं और मेरे साथ में कुछ साथी लड़के और भी थे। हम बाजार से गुजर रहे थे तो हमने देखा बाबा उक्त दुकान पर बैठे थे। हमने अपने पिताजी से वैर वाले बाबा मनोहरदास के बारे में सुन अवश्य रखा था। लोगों के बताने पर हमें ज्ञात हुआ कि ये ही बाबा मनोहरदास जी हैं। पहले तो मुझे कुछ दिखाई न दिया, क्योंकि धोती कमीज, जाकिट, जूते पैरों में सिपाहियों जैसी जैकिट्स गले में साफी सिर पर काली टोपी हाथ में बैंत तथा एक हाथ में लम्बी सी चिलम लगी हुई थी। दुकान पर अपनी मस्ती में बैठे हुए थे। एक सामान्य नागरिक जैसी वेश-भूषा में आप विराजे हुये थे। मुझे सम्बोधित करके बोले पर अरे परसादी। कहाँ डोलता है मेरे मटा"! मैं कुछ समझ नहीं क्यों कि मेरा नाम तो बाबूलाल है। खैर मैंने नजदीक जाकर चरण छुए, और कहा कि मेरे नाम परसादी नहीं बाबूलाल लै। बाबा बोले–"हाँ मेरे मटा! तेरा ज्ञान न्यारा है ले"। ऐसा कहकर मुझे एक मुट्ठी मूंगफली दी। यह बाबा से मेरी प्रथम मुलाकत थी।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 35

चिन्ता नहीं करना .....

लगभग दो वर्ष बाद आषण नोवीं भडरिया की एक घटना है, हमारे बयाना से एक बारात वैर गई उसमें मैं तथा मेरा भाई अन्य साथी गये हुए थे। बारात वैर की फुलवारी में ठहरी थी। हमने विचार किया कि चलो बाबा के दर्शन कर आते हैं। हम कुछ लोग जिनमें मेरा बड़ा भाई भी था। बाबा धुने पर परताप गंगा के किनारे पहुंचे बाबा उस समय अपने धुने पर विराजे हुये थे। मुझे देखकर बोले परसादी, आ हाँ मुझे पता था कि तू बारात में आएगा।" हम उन्हें ढोक देकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद बाबा बोले– परसादी जरा मेरे पैरों को दवाना उन्होंने एक पैर आगे बढ़ा दिया मैं दवाने लगा लगभग आधे घण्टे तक मैं पैर दवाता रहा लेकिन उन्होंने मना नहीं किया, फिर हाथ आगे बढ़ा दिया इस तरह मुझे लगातार हाथ पैर दवाते काफी समय व्यतीत हो गया तया मन में ऊब भी गयी, मन ही मन सोचने लगा कि कहीं बारात की चढाई शुरू नहीं हो गई हो यहाँ से चलना चाहिए। बाबा ने मेरी मनोवृत्ति

को जान लिया था। बोले–"मेरे मटा, अभी चढाई में बहुत देर है, चले जाना।" कुछ देर हम वहाँ रुक कर चलने लगे तो आप बोले परसादी! रात को भगदड़ मचेगी कोई चिन्ता की बात नहीं कुछ नहीं होगा डरना नहीं। हम सोचने लगे कि भगदड़ कहाँ मचेगी कुछ समझ में नहीं आया। रात को सारी बारात सोई हुई थी कि अचानक भाग दौड़ तथा कोलाहल की आवाजें सुना दी लोगों ने कहा कि हुल्लड़ शुरू हो गया, मार-काट मच रही है रात्रि का लगभग एक बजा होगा सारे बाराती इधर-उधर भाग गये कुछ छुप गये। मैंने मेरे भाई को जगाया कि सारे लोग भाग चुके है चलो कहीं हम भी चलें कुछ अनिष्ट नहीं हो गाये हम वहाँ से जाने का विचार कर ही रहे थे कि बेटी वालों की ओर से लोग आ गये और कहा कि कुछ नहीं है कुछ लोगों ने झूठी अफवाह उड़ा दी है। आप आराम से सो जाओ।" इससे यह सिद्ध होता है कि बाबा को भविष्य की जानकारी पूर्व में ही हो जाया करती थी।

(उपर्युक्त दोनों स्मरण मुझे श्री बाबूलाल ब्राह्मण निवासी मावडा गली, बयाना ने सुनाए)

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 36

देख यह हमारा दरबार है

हुजूर प्रायः मुझे अपनी हजामत बनवाने हेतु बुलाया करते थे और उन्होंने मेरा नाम "सौली ख्वास" रख दिया था मुझे इसी नाम से पुकारा करते थे। एक दिन का प्रसंग है हुजूर बाबा मुझसे बोले "सौली ख्वास चल" आप धूने से उतर कर चलने लगे मैं उनके पीछे हो लिया अचानक रुके और बोले मटा, तू गुरुन का ख्वास है आगे आगे चल"। मैं हुजूर के हुकम से आगे चलने लगा किले की सीड़ियों के सामने पहुंचे तो आप रुक गए और बोले–सौली ख्वास देख यह हमारा दरवाजा है। मैं बोला हुजूर यह तो किले का दरवाजा है और किला राजा प्रताप सिंह का है।" बाबा बोले–"हे, मेरे मटा वह नहीं यह।" ऐसा कहकर दो पत्थर उठाकर दो ओर रखे जहाँ वर्तमान में बाबा का बाहरी मुख्य द्वार बना हुआ है उस समय में वहाँ कुछ नहीं था जंगली झाड़ियां खड़ी हुई थी, उन पत्थरों को रख कर बोले कि यह हमारा दरवाजा है। फिर मुझे अन्दर की ओर झाड़ झंकाड़ों में ले गये और बोले–"सौली ख्वास जरा नाप तोल कर।" मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि हुजूर क्या लीला रच रहे हैं उन्होंने चार पत्थर चार कौनों में रखवाये और कहा मेरे मटा तू गुरुन का ख्वास है मेरे हाथ से हमारे मकान का मुहूर्त ठीक रहेगा।" मैंने मजाक के स्वर में कहा कि न पूजा की सामग्री न गुड़ बटवाया और मकान का मुहूर्त ठीक रहेगा।" मैंने मजाक के स्वर में कहा कि न पूजा की सामग्री न गुड़

बटवाया और मकान का मुहूर्त हो रहा है। उल्लेखनीय है कि अब जहाँ मंदिर बना है, जंगली झाड़ियों से भरा हुआ क्षेत्र था। बोले इधर हमारा मकान तथा उधर हमारे चौकीदार राजा गजेन्द्र सिंह रहेंगे।'' मैंने कहा अब चलो बन गया आपका मकान कुछ दिन दक्षिणा भी है या वैसे ही मुहूर्त हो रहा है। मुझसे बोले–''मटा! तू आनंद करेगा इस प्रकार बाबा ने अपने जीवन काल में ही वर्तमान मंदिर बनने के संकेत दे दिये थे, अतः व भविष्यवक्ता थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 37

सेठानी के पुत्र प्रदान करना

आगरा की एक सेठानी थी अपने पति को साथ लेकर बाबा के धुने पर आई उस समय में भी बाबा के पास ही मौजूद था। वह देखने में बहुत सुन्दर थी लेकिन उसके पुत्र नहीं था। वह पुत्र की कामना लेकर बाबा की शरण में आई थी। बाबा ने दूर से ही उसे देखा और पीठ मोड़कर बैठ गये मुझसे बोले–सौली ख्वास! इसको वहीं बैठा दे, इधर नहीं आने देना, वह औरत धूनें की दो सीढियां चढ़ चुकी थी, मैंने उसे आगे बढ़ने से रोका, बाबा ने हाथ के इशारे से कहा'' बैठ जा'' वह स्त्री हाथ जोड़कर तीसरी सीढ़ी पर ही बैठ गई। बाबा बोले–यहाँ क्या रखा है– क्यों भटकती है। वह औरत कुछ नहीं बोली हाथ जोड़े माथा टिकाये बैठी रही। अचानक हुजूर के हृदय में उसके प्रति दया भाव उमड़ आया। बोले सौली ख्वास जामुन के पेड़ से उसे खोल। मैंने देखा कि एक बहुत जीर्णशीर्ण लंगोट जो गंन्दगी से काला पड़ चुका था, मैं उसे खोलकर लाया बाबा ने उसे धुलवाया और उसका पानी उस औरत को ढककर देने के लिए मुझसे कहा। मैं लोटे में लेकर उसे देने गया पहले तो वह कुछ झिझकी लेकिन मैंने उसे ईशारा कर दिया कि तेरा कल्याण होगा वह उसे पी गई। नौ दस मास बाद वह अपने पुत्र को लेकर हुजूर के दरबार में उपस्थित हुई। उल्लेखनीय है कि बाबा के सत्यलोक प्रस्थान के बाद तक वह कुछ ना कुछ सेवा यहाँ भिजवाती रहीं इस प्रकार उनके पास जो भी जिस कामना को लेकर आया आपने उसे खाली नहीं जाने दिया, वह सच्चे अर्थों में दाता थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 38

(कुभाव गति के भोग को फिकवा देना)

सारी दुनियाँ की बलाय यहां लाया गया है

एक बार भरतपुर दरवाजा बाहर पुरबनी वाली बगीची पर साधु भगवान

गिरी के यहाँ अन्नकूट का आयोजन किया गया सवा मन बाजारा कढी चावल आदि भोग तैयार किया गया। बाबा भगवान गिरी ने कहा कि बाबा मनोहर दास को भी पहुँचाओ। पं. प्रभुदयाल भुसावरिया बोला मैं ले जाता हूँ वह दो मूर्तियों का भोजन लेकर बाबा को देने गया बाबा उस समय धुने के पास छोटे लाल कोठारी की दूकान पर बैठे थे, जब प्रभुदयाल वह भोग लेकर वहाँ पहुँचा तो बाबा बड़े क्रोधित हुये बोले साले सारी दुनिया को अलाय-बलाय का उतारा करके मेरे पास लाया है फैकदे इसको।'' और उसके हाथ से लेकर उस भोग को फैंक दिया और न जाने क्या-क्या कहते रहे। पं. प्रभुदयाल ने जाकर सारा वृतांत सुनाया कि बाबा बहुत नाराज हुये हैं। इसके बाद मैं नहा धोकर पूर्ण शुद्धता के साथ पाँच छः आदमियों का भोग लेकर बाबा के धुने पर गया उस समय बाबा बहुत प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुये थे मुझे देखकर बोले–''सौली ख्वास बड़ी मस्तानी चाल से चलता है। मैंने नमरकार ढोक दी और प्रसाद की परात हुजूर के सामने रख दी बोले'' पकौड़ी तो अच्छी बानी हैं। मैंने परात से कपड़ा हटाकर बाबा को पकौड़ियाँ दिखाई। हाँ हुजूर पकौड़ी लेकर आया हूँ। उल्लेखनीय है कि जब मैं प्रसाद लेकर चला था तो कढ़ी से पकौड़ियाँ विशेष रूप से निकाल कर बाबा के लिए लाया था क्यों कि मुझे मालूम था कि हुजूर को पकौड़ियाँ विशेष प्रिय हैं। आप बोले–''ऊपर रख दे : चल, तू ख्वास और मैं ब्राह्मण दोनों भोजन करें।'' मैं बोला–हुजूर आप पाएँ, मैं तो वहीं जाकर प्रसाद ले लूंगा हाँ भाई, तुम गुरुजी के साथ ही प्रसाद लोगे मैं चलने लगा तो आप बोले अरे इतना बना लिया है कौन खाएगा इसको। हमने देखा कि उस दिन सबा मन बाजरे का प्रसाद इतना हो गया कि शाम तक बंट नही पाया , हमने तथा पं. रामस्वरूप जी मिश्र ने उसे सबह कोलीपाड़े में बाँटा था। यह संस्मरण मुझे श्री नत्थी लाला खवास जो लगभग 70 वर्ष के हैं सुनाया। इससे यह सिद्ध होता है कि वे भाव-भक्ति एवं शुद्ध हृदय द्वारा लाया गया प्रसाद ही स्वीकार करते थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 39

नत्थी ख्वास को पुत्र प्रदान करना.....।

''एक दिन की बात है बाबा हमारे यहीं विराजे हुए थे एक कागज पर हमारी जमीन का नक्शा खींचते हुए बोले–''यह हिस्सा तेरे मतलब का नहीं धर्म क्षेत्र है।'' दूसरी तरफ के हिस्सों को देखकर बोले–''मटा, यह घेर खाली रहेगा।'' मैं बोला हुजूर आप ही देख लो।'' बाबा कुछ सोचने लगे। उल्लेखनीय है कि मेरे उस समय केवल लड़कियाँ ही थी, लड़का एक भी नहीं था। बाबा ने मुझसे कहा''–तेरी वहू को बुला–''मैंने ऐसा ही किया जब वह आई उसने दूर से बाबा को ढोक, दी बाबा ने उसे एक ओर बैठा दिया, थोड़ी देर बाद कहा'' वहीं उधर बैठो, फिर बोले

उधर नहीं इधर ऐसा कहकर उन्होंने उसे थोड़ी देर में तीन चार जगह बैठोने का इशारा कर दिया, मैं बोला–''बाबा क्या सांग कर रहे हो।'' तो आपने कहा ठहर मेरे मटा तेरा ज्ञान ध्यान न्यारा है।'' ऐसा कहकर अपनी जेब से चार बेर निकाले, अपने हाथ में रखकर देखते रहे और कुछ गुनगुनाते रहे'' ॐ अभैनाय अखैनाम अजर नाम. .....। मुझ से बोले–सौली ख्वास ले'' मुझे चार बेर दिये और उनमें से एक फिर उठा लियो'' देख, यह ठीक नहीं, ये तीनों ठीक है।''

आगे चलकर मेरी पत्नी को चार पुत्र प्राप्त हुये लेकिन एक की अकाल मृत्यु हो गई। इस प्रकार बाबा श्री मनोहर दास जी महाराज ने मुझे ''आनन्द करेगा'' आशीर्वाद दिया मेरे उन्हीं की कृपा से अब सर्वानन्द हैं।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 40

कानों की खिंचाई .....''खूनी की नंदियाँ बह जाएगी''

बात सन् 1947 की है कुछ मुसलमानों को जो कभी हिन्दू थे, पुनः हिन्दू धर्म में लिया जाने का विचार हुआ, मुझे तहसीलदार साहब ने नाई लाने के लिए कहा मैं मुण्डन कराने हेतु करीव 25 नाई लेकर प्रताप गंगा के पास आया मुसलमानों का मुण्डन किया गया, उन्हें जनेऊ धारण कराया गया, जब मैं लौटकर घर जा रहा था तो बाबा अपने धूने के पूर्वी द्वार पर चवूतरे पर बैठे चिलम पी रहे थे मुझे आवाज देकर बुलाया सौली ख्वास यहाँ आ।'' मैं पहुँचा चरणों मैं ढोक दी लेकिन बाबा ने मेरे दौनों कान बड़ी जोर से पकड़ लिए और पूरी ताकत के साथ उनको मरोड़ा लगाया बोले–''तू गुरुन का ख्वास हैं किसके हुकुम से गया था, ''भिष्ठा और अन्न का अन्तर नहीं जानता, सौलै! खूनों की नदियाँ वह जाएगी।'' मैंने कहा हुजूर मैं तो नाईयों को ले गया था मैंने मुण्डन नहीं किया था। बाबा ने मेरे कानों को ऐसा मरोड़ा कि मेरी आखों में आँसू निकल पड़े कुछ समय बाद वास्तव में हमारे क्षेत्र में साम्प्रदायिक दंगें हुये मार-काट खून-खराबा हुआ।''

यह संस्मरण मुझे 70 वर्षीय श्री नत्थी लाल ख्वास ने सुनाया था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 41

''लो मैंने तुम्हें अटल कर दिया''

एक बार मेरे पिता श्री किशन लाल ख्वास उनके साथ पं. फत्ते लाल नगायच (पान वाले) तथा अन्य कुछ लोग थे गोवर्धन की परिक्रमा के लिए जा रहे थे। बाबा

उस समय चिमन वाली कुईया के पास बड़ के पेड़ के नीचे बैठे थे। बाबा को ढोक देकर जब वे चलने लगे तो बाबा ने कहा–''काका जी तुम नहीं जाओगे अगर तुम जाओगे तो मैं भी यहाँ नहीं ठहरुंगा'' बाबा ने बहुत जिदकर के उन्हें यही रोक लिया, दूसरे लोग भी नहीं गये। उन्हें साथ लेकर बाबा प्रताप गंगा की सीढ़ियों पर ले गये और पानी के छीटे देकर सात नाम का मंत्र बोला ॐ अखै नाम अभै नाम. .....। लो तुम्हें मैंने अटल कर दिया अब कोई खतरा नहीं, कुछ समय बाद बहुत जोर का तूफान आया तथा जोरों की वर्षा हुई सैकड़ों की तादाद में पेड़ उखड़ गये। बाबा ने लोगों को इस प्राकृतिक विपदा से बचाकर रक्षा की। उल्लेखनीय है कि मेरे पिता को अपने जीवन में कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा। एक दिन वे हज़ामत बनाकर आये और मुझसे चाय पीने के लिए मंगाई चाय में गंगा जल एवं तुलसी डालने के लिए कहा मैंने ऐसा ही किया। उसे पीकर सो गये और अपने प्राणों को त्याग दिया। यह सब कुछ बाबा का ही आशीर्वाद था।

(यह संस्मरण श्री नत्थी लाल ख्वास ने मुझे सुनाया।)

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

❑❑❑

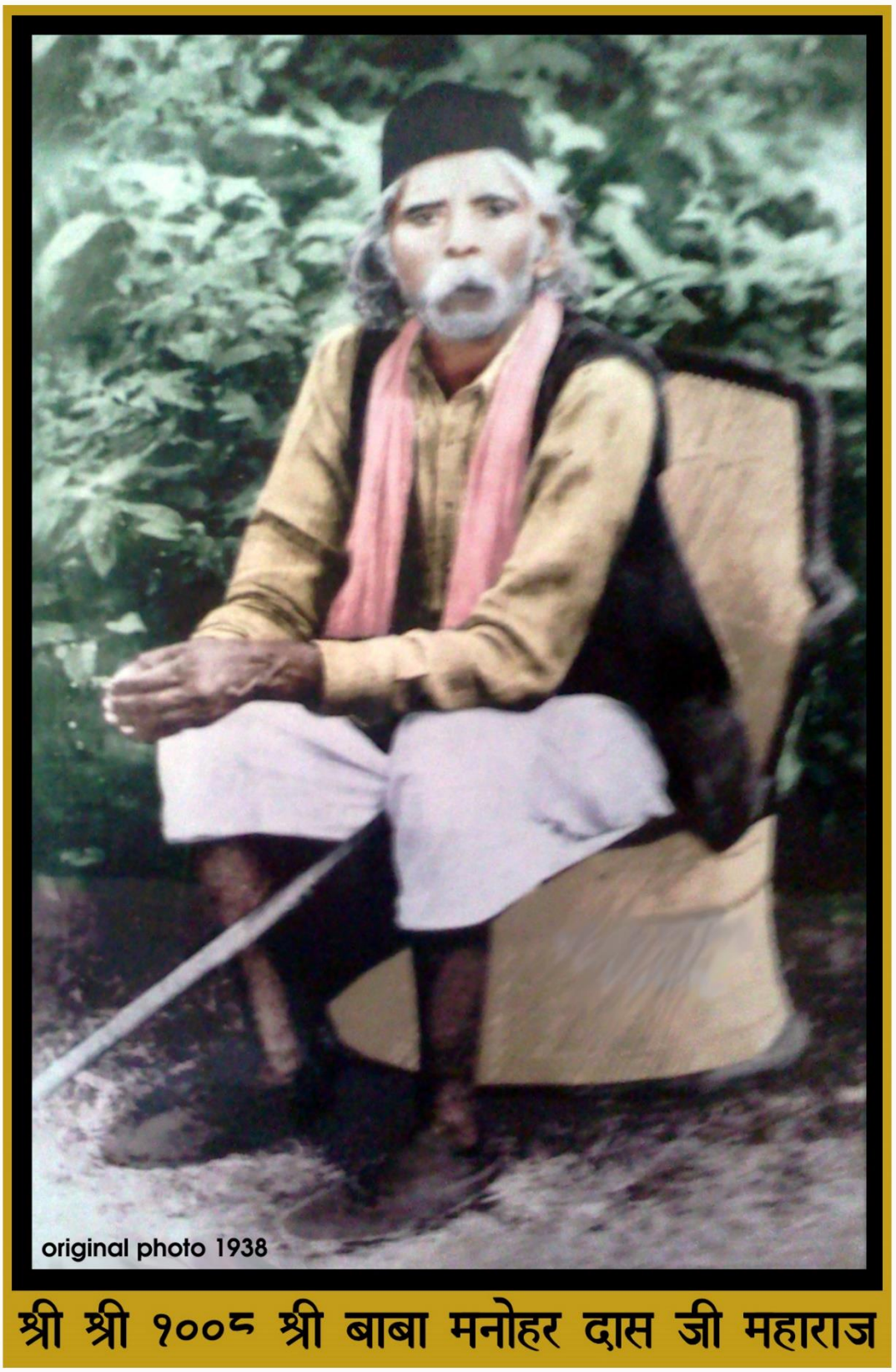

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज